। श्री शंकरमहाराज स्फुरित आनंदी कवच।

आनंदी आनंद गडे, आनंदाचा मेरु आनंद फेरे
आनंदात डुंबोनी आनंद की देवे मलाई,
आनंदी आनंद कहा चले रे आनंद कहा बैठे रे आनंद,
आनंद कि मौज मे आनंद चले, आनंद सोचे आनंद बैठे
आनंद को लेके शिखा चोटी पे बैठे आनंद,
आनंद हि आनंद सारे जग मे आनंद भरे,
सात समुंदर मे आनंद, सात लोक में आनंद,
जहाँ देखे आनंद वही पावे आनंद,
आनंद मथे तो मिले आनंद,
आनंद भावे तो निकले आनंद, आनंद कि डाली,
आनंदी कि शय्या, पुरे जीवन में चलावे आनंद कि नैय्या,
सद्‌गुरु स्वामी देव आनंद, आनंद कि मस्ती में डुबे आनंद,
शंकरजी बोले मेरा बेटा आनंद, रोगी को तारे आनंद,
आनंद भरे दारिद्र्य कि झोली, विश्व को पुरा करे आनंद,
जय आनंद, श्रीराम आनंद,कनैह्या तुही आनंद,
नेत्रज्योती में आनंद, वाक्‌शुद्धी में आनंद,
आनंद भरे मंजिल उपर की,
नीचे झाके तो आनंद, आनंद, आनंद,
आनंद गुरुदेव स्वामी देवे आनंद, नवनाथ बोले आनंद,
अज्ञान का कुआ पुरावे ज्ञान का आनंद,
चौरासी सिध्द खोले आनंद, आनंद तुही माई,
आनंद तुही साई, आनंद से झुले बनावे आनंद,
शंकरजी देवे ज्ञान की डिब्बी,

डिब्बे में भरा स्वामीजी का आनंद,
आनंद हि खोले ज्ञान कि गुफा,
ज्ञान की गुफा में आनंद का दिया,
आनंद के दिये में आनंद की बाती,
आनंद की बाती से आनंद का उजाला,
आनंद के उजाले से आनंद रुपी ज्ञान का फैलाव,
उस फैलाव से करे सत्य का प्रकाश,
प्रकाश में रहे परमात्मा स्वामीजी माऊली का वास,
माऊली के चरणों में शंकरजी रहे उसके पास,
आनंद कवच यह करे जीवन में आनंद भरे आनंद हि आनंद,
सभी जगह पे आनंद, सत्यज्योती आनंद,
आदेश गुरु को देवे आनंद,
जैसे गोरख देवे मत्सेंद्र को आनंद,
आनंद की छाया में भगत सेवे आनंद,
आनंद की माला फेरे १०८ आनंद,
चांद सुरज को देवे आनंद, ग्रह नक्षत्रों को देवे आनंद,
सत्यनाम आनंद का प्रकाश फैला के चले,
जीवन की डोली आनंद से भरे,
आनंद हि आनंद सतनाम आनंद,
पुरब में आनंद अगन में आनंद दक्खन में आनंद
नैऋत में आनंद पश्चिम में आनंद वायूकोन में आनंद
उत्तर में आनंद ईशान में आनंद, उपर आनंद नीचे आनंद,
ज्ञानेंद्रिय में आनंद कर्मेंद्रिय में आनंद
अंतःकरण में आनंद धी - धृती स्मृती में आनंद

सभी रीश्तोमें आनंद, शत्रू सहवास में फैलावे आनंद,
जन्म से मरण तक आनंद,
गुरु की छाया सद्गुरु की छाया में आत्मा का आनंद
शब्द साचा पिंड काचा पुरो मंत्र ईश्वरी वाचा
ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐ स्वामी हरि ॐ तत्सत